



कोरवा टेबोज बोतामी कोरवा भाषा प्रवेशिका KORWA PRIMER



CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

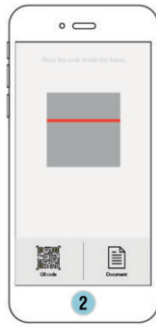
क्यूआर (QR) कोड से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पॉन्स कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला  के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा



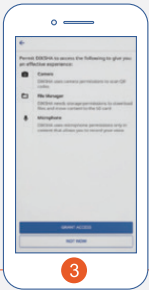
दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



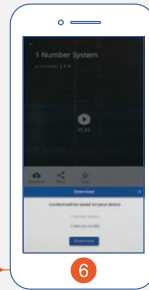
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबंधित ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

कोरवा टेबोज बोतामी
कोरवा भाषा प्रवेशिका
KORWA PRIMER



भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

कोरवा टेबोज बोतामी

कोरवा भाषा प्रवेशिका

KORWA PRIMER

A basal reader of Korwa alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani

Shailendra Mohan

Pramod Kumar

Sujoy Sarkar

ISBN: 978-81-970769-8-5

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj

Cover Photo: Hiranman Korwa

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



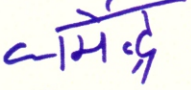
संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।


(धर्मेन्द्र प्रधान)

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary



भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy



संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चों में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/ बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

दिसंबर 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Korwa Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Basanta Kumar Panda, Project Director, Centre of Excellence for Studies in Classical Odia, Bhubaneswar

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Binay Pattanayak, Senior Researcher cum Chief Consultant, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Member Coordinators

Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons

Hiraman Korwa, Teacher, Rajkiya Prathimik Vidhyalaya, Sinjo, Garhwa

Anup Kumar Korwa, Korwa Language Speaker, Chinia, Garhwa

Anjana Grace Huhar, Korwa Language Speaker, Homiya, Bairiya, Ramkanda

Shanti Huhar, Korwa Language Speaker, Homiya, Bairiya, Ramkanda

Pramod Kumar, Assistant Professor, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak

Hilal Ahmad Dar, Junior Resource Person (JRP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Hindi Reviewers

Biresh Kumar, Senior Resource Person (SRP), National Testing Service-India (NTS-I), CIIL, Mysuru

Prem Chandra Jha, Guest Lecturer, ERLC, CIIL, Bhubaneswar

Sumitra Mishra, JRP, NTS-I, CIIL, Mysuru

Design Team

Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

कैसे पढ़ानी है भाषा प्रवेशिका (कोरवा)

कोरवा जनजाति देश के झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश, असम एवं मध्य प्रदेश राज्यों में निवास करती है। झारखंड के गढ़वा, पलामू और लातेहार जिलों में मुख्य रूप से इनकी आबादी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कोरवा समुदाय की जनसंख्या 28,453 है। ये लोग मुख्यतः कृषि एवं जंगल से संबंधित गतिविधियों पर अधिक निर्भर करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 के अंतर्गत तीन से आठ साल तक के बच्चों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। भारत के ग्रामीण इलाकों में बच्चे कक्षा की शिक्षा-दान प्रणाली को ठीक से समझ नहीं पाते हैं। यह बात विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। इसीलिए केंद्र सरकार ने तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को बाल वाटिका एवं प्रथम तथा द्वितीय कक्षा के बच्चों को आद्य-प्राथमिक स्तर पर मौलिक साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था की है।

इसमें स्थानीय गीतों एवं कविताओं के माध्यम से बच्चों की मौखिक भाषा के विकास पर ध्यान दिया गया है। यह काम प्रवेशिकाओं में कविताओं तथा चित्रों के माध्यम से किया जा रहा है। इसके साथ ही बच्चों के ध्वनि-परिचय, वर्ण-परिचय एवं लेखन के अभ्यास के लिए भी भाषा प्रवेशिका का प्रयोग किया जा रहा है।

बाल वाटिका स्तर से द्वितीय कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने से उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनकी सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का विकास भी हो सकता है। बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ना-लिखना सीखने के साथ-साथ धीरे-धीरे हिंदी भाषा में कैसे पढ़-लिख सकते हैं, इसकी सटीक पद्धति बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 में विस्तृत रूप से बताई गई है। बच्चे पहले पढ़ना-लिखना सीखते हैं इसलिए हिंदी भाषा की वर्णमाला की पुस्तकों में बच्चों की मातृभाषा एवं विद्यालय की हिंदी भाषा की समस्त ध्वनियों, वर्णों एवं मात्राओं को स्थान दिया गया है। पुस्तकों में दिये गये शब्दों का संग्रह बच्चों की संस्कृति एवं परिवेश से किया गया है।

बहुभाषी शिक्षा का मूल लक्ष्य बच्चों के घर की भाषा से पढ़ाना-लिखाना शुरू करके राज्य की भाषा में पढ़ने-लिखने की उनकी दक्षता को बढ़ाना है। कोरवा और हिंदी भाषा में प्रस्तुत यह प्रवेशिका झारखंड राज्य के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए है। मौलिक साक्षरता के चार प्रमुख चरण होते हैं। पहले चरण में कविताओं, कथाओं एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों का बौद्धिक विकास किया जाता है। उसके बाद भाषा-शिक्षण के लिए बच्चों को वस्तुओं के साथ-साथ शब्दों से भी परिचित कराया जाता है और शब्दों में व्यवस्थित अक्षरों को पहचाना जाता है। इस क्रम में बच्चे अलग-अलग अक्षरों को पहचानना सीखते हैं। इस प्रकार बच्चे ध्वनि एवं वर्ण के बीच के संपर्क को समझते हैं। भाषा प्रवेशिका को कैसे पढ़ना है, इसके मूल बिंदुओं को नीचे लिखा गया है-

ध्वनि-परिचय

बच्चे चित्र देखकर उस वस्तु का नाम बताएँगे। शिक्षक पूछेंगे कि चित्र का नाम किस ध्वनि से शुरू होता है? जैसे कोरवा भाषा का शब्द 'अमच' और बच्चे चित्र को देखकर यह पहचानेंगे कि यह शब्द 'अ' की ध्वनि से शुरू होता है।

वर्ण-परिचय

शिक्षक पहले बच्चों को बताएँगे कि 'अ' वर्ण कैसा दिखता है। फिर उसमें दिये गये कुछ शब्दों में 'अ' अक्षर या वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे। बच्चे तीन-चार शब्दों में से 'अ' अक्षर को पहचान कर उसकी ध्वनि का उच्चारण करेंगे और उसे लिखने का अभ्यास करेंगे।

पढ़ना

बच्चे चित्र देखकर अपनी भाषा में शब्द बोलेंगे। उस शब्द पर उंगली को चलाकर बच्चे कोरवा शब्द 'अमच' को पढ़ेंगे। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पढ़कर वे 'अ' वर्ण को पहचानेंगे और उसका उच्चारण करेंगे। बच्चे शिक्षकों को यह बताएँगे कि 'अ' अक्षर शब्द के आरंभ में आता है या बीच में या अंत में।

शिक्षक बोर्ड पर 'अमच' के अलावा तीन-चार अन्य शब्द भी लिखेंगे। फिर बच्चों को एक-एक करके बुलाएँगे और उनसे शब्दों को पढ़ने एवं वर्णों को पहचानने के लिए कहेंगे। चूँकि ये सारे शब्द बच्चों के जाने-पहचाने परिवेश से लिए जाते हैं। अतः वे प्रवेशिका में चित्रों को देखकर शब्दों को पहचान पाएँगे और उन्हें सहजता से बोल पाएँगे। शिक्षक कोई एक शब्द लिखेंगे और उसके प्रत्येक वर्ण को अलग-अलग पढ़ने के लिए बच्चों से कहेंगे। फिर वर्णों को जोड़कर उन शब्दों को पढ़ने के लिए कहेंगे। इससे बच्चों का वर्ण परिचय, शब्द परिचय एवं ध्वनि परिचय हो जाएगा। एक बच्चे द्वारा शब्द को पढ़ने के समय अन्य बच्चे उसके साथ मिलकर उस शब्द को दुहराएँगे। इसे 'सामूहिक पठन' कहते हैं।

लेखन

शिक्षक बच्चों को पहले 'अमच' शब्द के 'अ' अक्षर को लिखना सिखाएँगे। इसके लिए कलम/पेंसिल को कैसे चलाया जाता है, यह भी सिखाएँगे। इसे 'सहायक लेखन' कहा जाता है। इसके बाद बच्चे प्रवेशिका में दिए गए खाली स्थान में 'अ' अक्षर को स्वयं लिखेंगे। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे।

बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के लिए हर प्रविष्टि में दो-तीन पंक्तियों की कविता दी गई है। इसको पढ़ कर एवं गाकर शिक्षक बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। शिक्षक विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बच्चों की कहानी की किताब से कहानियाँ सुनाकर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। वे प्रथम एवं द्वितीय कक्षा के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ एवं गीत सुनाएँगे।

इस प्रवेशिका में जितने शब्द दिए गये हैं वे साक्षरता का नमूना मात्र हैं। लेकिन बच्चे सैकड़ों शब्दों को जानते हैं। इसलिए एक वर्ण वाला शब्द पूछने से वे अनेक शब्द सुना सकते हैं। जैसे, शिक्षक यह पूछेंगे कि - 'अ' से शुरू होने वाले कुछ शब्द सुनाओ।

बच्चों की सुविधा के लिए पहले कोरवा भाषा की वर्णमाला से गीत/शब्द/अक्षर दिए गए हैं। कोरवा सीखने के समय बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से हिंदी ध्वनियों एवं लिपि को सीख सकते हैं।

नोट : कोरवा में 'अं' का प्रयोग प्रथमाक्षर में नहीं होता है, किंतु अन्यत्र इसका प्रयोग (ं) मात्रा के रूप में होता है। इसलिए हमने इस स्वर को स्वर वर्ण की सूची में रखा है।

राज्य के विद्यालयों में वितरित 'शिक्षक सहायक पुस्तिका' को पढ़कर मौलिक साक्षरता के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

नीचे दी गई रेखाओं को देखो और खाली स्थानों में उसी तरह की रेखाएँ बनाओ :

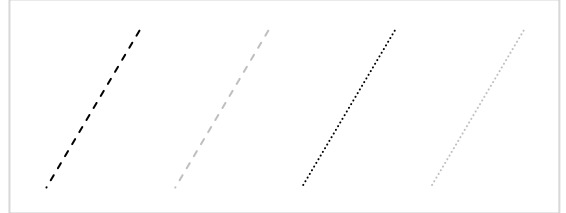
खड़ी रेखा :



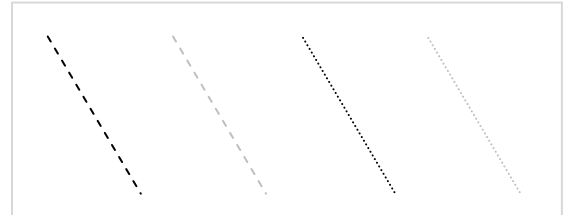
पड़ी रेखा :



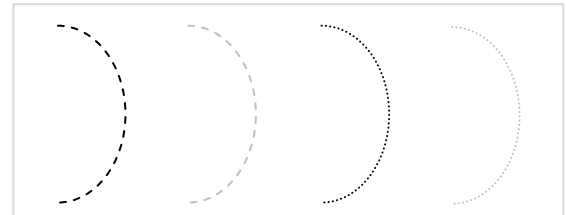
आड़ी रेखा 1 :



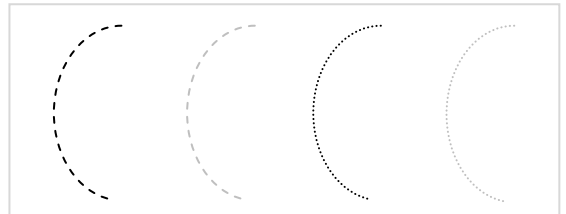
आड़ी रेखा 2 :



अर्ध वृत्ताकार रेखा 1 :



अर्ध वृत्ताकार रेखा 2 :



नोट: शिक्षक यह सिखाएँगे कि कलम/पेंसिल को कैसे पकड़ें और दिये गये स्थानों में रेखाएँ कैसे खीचें।

कोरवा वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	
मात्रा	ा	ि	ी	ु	ू
े	ै	ो	ौ	ं	ँ

व्यंजन

क	ख	ग	घ	
च	छ	ज	झ	
ट	ठ	ड	ढ	
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
स	ह			

अक्षर जो हिंदी में तो हैं लेकिन कोरवा में नहीं

स्वर

ऋ	अः				
---	----	--	--	--	--

व्यंजन

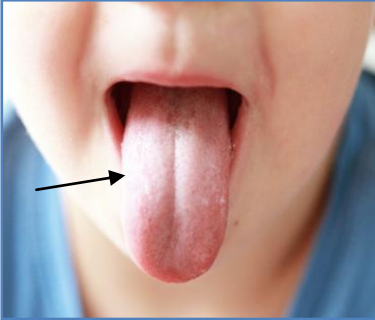
ड	ञ	ण	
श	ष		
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

अ

अमच

चम्मच

अमच इंज नुमु इदाना
तीम जीघइते धंधा इदाना



अलंग

जीभ

अड़ा

साग

अनाड़

अनार

अ

अ

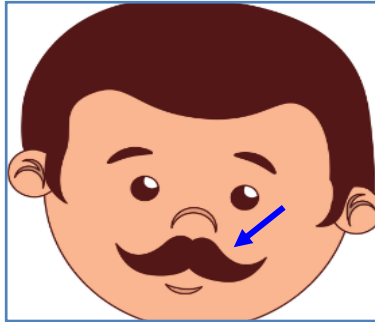
अ

आ

आस

धनुष

आस रिमुमीह नेदायकेते
अनम सिड़ते मियांटांग नेदयकेते



आहम

मुँह

आहाउब

मूँछ

अंगआ

उषाकाल

आ

आ

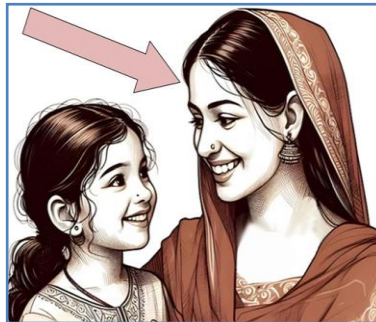
आ

इ

इपील

तारा

बाँगों ओ होरींजएंगा इपील सेंग मेजुआ
सोनाकू हो छिपी रे दुधुर लेटे जोमूआ



इतीज

खरोंचना

इंगम

माता

इमटा

चिमटा

इ

इ

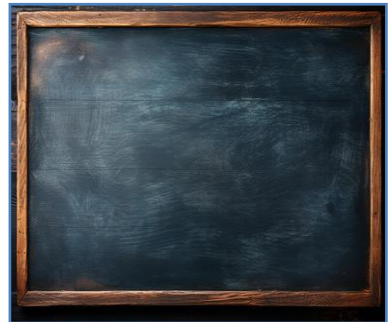
इ

ई

ईबोड़ा

हाथी

ईबोड़ा राजा सेन बातू
नेलेज ए कुतू भुईजार



ईजओड़ा

शौचालय

ईफोग

गैंडा

ईपड़

श्यामपट्ट

ई

ई

ई

उ

उट

मशरूम

उट इदानू इंज उट इदानू
छातेर जीघइते नेलेजपे इदानू



उल्ह

आम

उजू

मूर्ति

उम्हूल

छाया

उ

उ

उ

ऊ

ऊतू

सब्जी

चुनिज जोमोमिह हेरे ऊतू लिमटू ताहेर
एचे बीड़यती
लेन्दे लेन्दे अनम गोतेम सेनेआ जीरीट
चुनिंज कहड़िआ



ऊब

बाल

ऊमूहओड़ा

स्नानघर

ऊमूह

नहाना

ऊ

ऊ

ऊ

ए

एडगी

एड़ी

ए ते एडगी कटट ए तोस
सेनमी सेनकेते मड़ंग तवम



एनेज

खेल

एसूड़ी

मिठाई

एपेटा

झंडा

ए

ए

ए

ऐ

ऐरें

कठफोड़वा

आपा बेला आ ऐरें ईदनू
टोकुयाना इदनू सहन सहठ



ऐपोट

पायल

ऐहोट

हँसुली

ऐटेंग

घंटी

ऐ

ऐ

ऐ

ओ

ओड़ा

घर

तिमीन जिरीट तिमिन मितु
इंज ओड़ा इदाना सिङ्गसे ते जिरीट



ओड़ेच

फटा
कपड़ा

ओतेड़

खेती

ओरेमू

खींचना

ओ

ओ

ओ

औ

औतू

गाँव

बछोई होरीडकेते आले आरुआ धंधा
पोंडी अरुआ औतू आ नुमु



औलूत

माला

औमुम

नथुनी

औऊब

क्लिप

औ

औ

औ

क

कटकोम

केकड़ा

कटकोम इंजरा नुमु इदना
बाटांग तीम एचे आटांग इंजरा कटट इदना



कउरा

गैंती

परकोम

खटिया

फड़ीक

नाग

क

क

क

ख

खचली

टोकरी

खचली रे उल्ह ईदाना
मेने तिबेमपे भाव ईदाना



खनता

सब्बल

मुखारी

दातुन

जोख

तौलना

ख

ख

ख

ग

गनल

चींटी

गनल आरुपे वोनोधंधा
कावर मेने लंगापे सहोदपे सीतोंग



गदम

डस्टर

लोंगरी

पहाड़ी क्षेत्र

बुलुंग

नमक

ग

ग

ग

घ

घनठा

घन

घनठा आले नुमु ईदाना
दिरी पोहग धंधा ईदाना



घनासी

भाथी

घघेरे

घेरा

घरटि

करछुल

घ

घ

घ

च

चटी

चप्पल

इंज नुमु चटी इदना
कोड़ा कोड़ी तुसीनपे इदना



चेपेड

रुपये

चेचेर

मिर्ची

ढोड़ोच

धकेलना

च

च

च

छ

छतेर

छाता

दा:उयू छम छम छम
छतेर नेकेते उडूंग इंज



छरतन

बर्तन

बछोई

पढ़ना

दोछ

तोता

छ

छ

छ

ज

जम

जामुन

मेनी जम केन्दे केन्दे इदाना
जवानू बरखा मेजपे इदाना
तवानू अहम रे दा मेजपे इदाना



जोनों

झाड़ू

बिजरी

बिजली

तितिज

चिड़ियों का झुंड

ज

ज

ज

झ

झरीत

बसंत

नेलेज झरीत मौकरादू मेचकेन
बोरुधु रे बाहा लंदालूकेन



झरटी

छत्री

मझारू

पंचायत

झकन

खिड़की

झ

झ

झ

ट

टकड़ी

बंदर

दुडुपकेडा मियाटाँग डाढ़ रेपर टकड़ी
लोहायाना दा ए आदिरीमु



टुमलेटे

नाश्ता

चूटकु

चूहा

मेट

आँख

ट

ट

ट

ઠ

ઠવા

નીલકંઠ

ઠવા એકે ડેડેંગે રેની તિતિજ ઈદાના
નીલ્ય આગાસ રેપર ઝઢવઈપે ઈદાના



ઠરકા

બિજલી
ચમકના

ઠોઠમ

હોંઠ

અઠા

આટા

ઠ

ઠ

ઠ

ड

डहरी

ओखली

डहरी इदाना नेनसे दीपिल
चेचेर जोमसा उवइपे रीड



डंगरी

गाय

हुंडार

भेड़िया

कंडा

घड़ा

ड

ड

ड

ढ

ढपू

गेंद

तेंग तोस दातीम बातिम जुबाय
ढपू इंज केडमा जुबाय



ढबरी

दीप

उढवई

उड़ना

हड़मढी

बूढ़ी

ढ

ढ

ढ

त

तहेर

खीरा

उतू हो दुकाड़ जुबामी
तहेर येखरी तिला आगुमी



तसर

खैर का पेड़

तिरिंज

दाँत

हेलेत

बाँस की
कोंपल

त

त

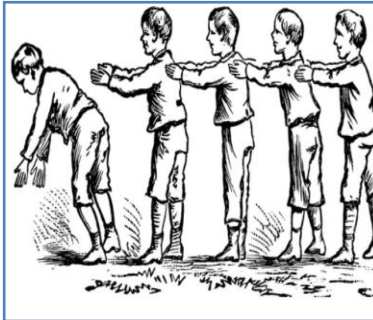
त

थ

थबड़

ऊँट

थबड़ इंज नुमु इदाना
बितिल रे सेनपे इदाना



थहोब

थन

थोथड़ाव

धक्का-मुक्की

कुइथर

कुआँ

थ

थ

थ

द

ददहा

समुद्र

तिमिन नाई मेचकेन
ददहा रे अटकेन



दोछ

तोता

येदेल

सेमल का पेड़

सोवोद

साफ करना

द

द

द

ध

धधु

उल्लू

धधु गितिज सिड़ावरी रिमूकेन
अंगाआकेन सीड़ इपील निरकेन



धफोड़

फाइल

दूधूर

दूध

बरधा

बैल

ध

ध

ध

न

नकीज

कंघी

नकीज ऊब ओ सेंगरेपे इदना
नेनलगड सिड़ावरी नुमु दोहोपे इदना



नबल

मेज

सोनाकू

सोना

बाना

भालू

न

न

न

प

परेवा

कबूतर

परेवा इदनू गुटरगु आरुपे इदनू
कूदी इंज जोमपे इदनू



पड़सा

पलास

होपोन

बच्चा

होपो

घोड़ा

प

प

प

फ

फउरा

फावड़ा

तीम रे फउरा नेकेन सेनपे इदनू
टेहडू ओतेड़ टीपाने आरुपे इदनू



फलटेन

कलम

रफोर

फुहारा

फबा

कली

फ

फ

फ

ब

बहर

भैंस

बहर इंज हेन्दे हेन्दे
नुमु इदाना राम दुलारी



बाँगो

चाँद

सुबीट

गूँथना

चुहुब

चोंच

ब

ब

ब

भ

भड़ो

जंगली बिल्ली

भड़ो जिघड़ते नेलेपे इदानू
वीर रे दोहोपे इदानू



भुड़ट

टिकट

भटभटवा

मोटरसाईकल

गोड़भी

चक्का

भ

भ

भ

म

मलहन

बींस

हुडींग हुडींग मितु चूनिंज मलहन उत्तू
चिवा मेने जोपेहो चिवा मुम रकपेहो



मकदम

महुआ

लिमिर

बादल

सकम

पत्ता

म

म

म

य

यमट

सेब

सीड़ जोकू रे बेनेस यमट
लेन्दे लेन्दे स मितु यमट



येखरी

ककड़ी

लेयर

ठंड

देया

पीठ

य

य

य

र

रसब

संतरा

रसब दाबाटाँग रे मियाटाँग होयोपे
हेनिसका सिरोर इंज आपुंम न्यूपे



राकेच

मेंढक

तारोब

चिरौंजी

अगरी

अंगुली

र

र

र

ल

लतर

लता

रुधु रे वाघा दोहोपे इदनू
लतर इंज कहड़ीपे इदनू



लड़ायी

खोलना

आपोलयाना

तैरना

बुहल

धोना

ल

ल

ल

व

ववज

सलाद

ववज उतू आ गोतेम होयोप इदाना
जोम रे बडे रिझु मेजपे इदाना



विवजा

जादूगर

रोवाकू

मक्खी

मेवा

पपीता

व

व

व

स

सरम

हिरण

सरम बीर रे दोहोपे इदाना
हुडिंग हुडिंग सडिया हुदे अंजोमपे इदाना



सूकरी

सुअर

तोसड़

घास

हरसी

हल जोतना

स

स

स

ह

हपट

जोंक

हपट इदनू इंज हपट इदनू
सिड़ कटट सबयपे इदनू
हुदे मेने छडवपे इदनू



हटा

सूप

लोहड़

सुखाना

बाहा

फूल

ह

ह

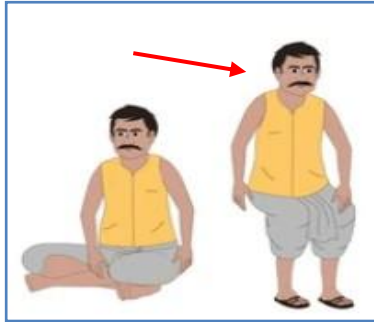
ह

ड़

बुचुड़ा

स्कूल

सेंड़ इंज पुचुड़ा इदनु
सेंड़ बछो ओऐते इदनु



हुड़

धान

चड़ा

खड़ा

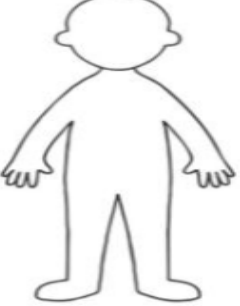
डिड़ेंग

पंख

ड़

ड़

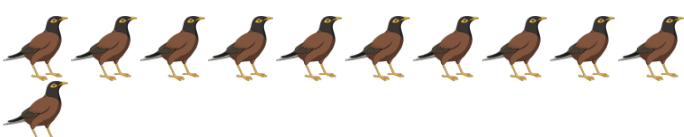
ड़

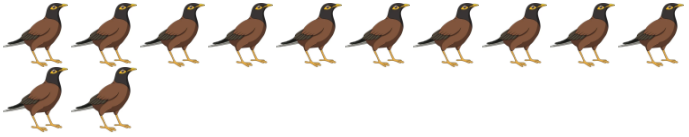
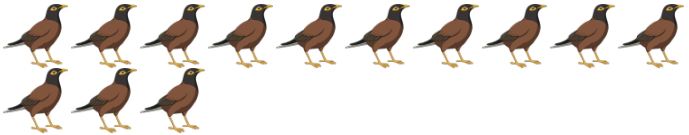
स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अ	उदासीन स्वर	सहन	टम
			
आ	ा	काया	जानता
			
इ	ि	विहि	तिरिल
			
ई	ी	बीर	तीम
			

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
उ	ु	बुरु	कुदी
			
ऊ	ू	रुधू	ठारू
			
ए	े	केडा	लेटे
			
ऐ	ै	खैया	बजैमी
			

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
ओ	ो	होड़	कोको
			
औ	ौ	तौड़िया	औझड़ी
			
अं	ं	अपुंम	मंझर
			
	ँ	मियाटाँग	चाटाँग
			

संख्या

1	मियाटाँग	एक	
2	बाटाँग	दो	
3	पेइटाँग	तीन	
4	चाटाँग	चार	
5	पाटाँग	पाँच	
6	छाटाँग	छह	
7	साटाँग	सात	
8	आटाँग	आठ	
9	नाटाँग	नौ	
10	दटाँग	दस	
11	दमियाटाँग	ग्यारह	

12	दबाटाँग	बारह	
13	दबेटाँग	तेरह	
14	दचाटाँग	चौदह	
15	दपाटाँग	पंद्रह	
16	दछाटाँग	सोलह	
17	दसाटाँग	सत्रह	
18	दआटाँग	अठारह	
19	दनाटाँग	उन्नीस	
20	बीसटाँग	बीस	

1	1	1	1	
2	2	2	2	
3	3	3	3	
4	4	4	4	
5	5	5	5	
6	6	6	6	
7	7	7	7	
8	8	8	8	
9	9	9	9	
10	10	10	10	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
14	14	14	14	
15	15	15	15	
16	16	16	16	
17	17	17	17	
18	18	18	18	
19	19	19	19	
20	20	20	20	

हिंदी वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
श	ष	स	ह		
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
ड़	ढ़				

ePathshala

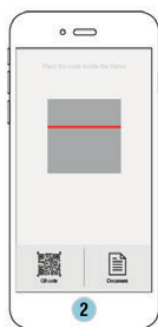
Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala 



Install ePathshala
Scanner app
from Play Store
and open



Get ready with
QR code scanning
window



Place scanner
above the
QR code



Select and click
on the link



Use available
e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA** 



Select preferred language



Choose your role:
Student
or Teacher



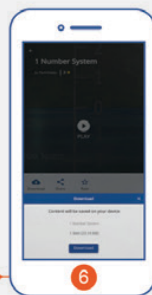
Grant access and allow app permissions



Tap to scan
the QR code



Focus camera
on the QR
code in
textbook



Click to Play
QR code
specific
e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SŪMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAO	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHLE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PŪ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MŌŪT)	104	TELUGU

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-IV (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in